''भारतीय धर्म एवं मूल्य भारतीय संस्कृति एवं सामाजिक मूल्यों का वर्गीकरण एवं मूल्य आधारित शिक्षा''

पूजा शर्मा
हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

धर्म भारतीय संस्कषति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। ये व्यक्ति की क्रियाओं तथा व्यवहार को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। धर्म इहलौकिक तथा पारलौकिक होता है। डॉ० राधाकृश्णम् ने धर्म की दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत की – ''धर्म एक गति है, एक विकास है ओर सब अच्छे विकासों में नूतन, पुरातन के अवशेष विद्यमान रहते है। (१) हमारी संस्कृति में जीवन के ऐहिक और पारलौकिक दोनों पहलुओं को धर्म से सम्बद्ध किया गया है धर्म उन सिद्धान्तों, तत्वों और जीवन प्रणाली को कहते है जिससे मानव जाति परमात्मा प्रदत्त शक्तियों के विकाश से अपना लौकिक जीवन सुखी बना सके तथा मष्त्यु के पश्चात् जीवात्मा षान्ति का अनुभव कर सकें।

१. *धर्म*
२. *शिक्षा*
३. *मूल्य*
४. *संस्कृति*
५. *भारतीय*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

पूजा शर्मा,

''भारतीय धर्म एवं मूल्य भारतीय संस्कृति एवं सामाजिक मूल्यों का वर्गीकरण एवं मूल्य आधारित शिक्षा'',

शोध मंथन,
दिस0 2017, पेज सं0 80.83,
Artcile No. 14 (SM 654)

http://anubooks.com/
?page_id=581

भारतीय धर्म एवं मूल्य :

धर्म भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। ये व्यक्ति की क्रियाओं तथा व्यवहार को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। धर्म इहलौकिक तथा पारलौकिक होता है। डॉ० राधाकष्णम् ने धर्म की दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत की – ''धर्म एक गति है, एक विकास है ओर सब अच्छे विकासों में नूतन, पुरातन के अवशेष विद्यमान रहते है। (१)

स्वामी विवेकानन्द ने धर्म को अनुभूति की वस्तु कहा तथा मनुस्मर्षति में धर्म में १० लक्षण कहे गये है – घर्षति, क्षमा, दम, अस्तेय, षौच, इन्द्रिय–निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और अक्रोध। (२)

प्राचीन भारतीय संस्कृति में धर्म तथा धार्मिक मूल्यों का उच्च स्थान रहा है। उनको वेद षास्त्रों और वर्णाश्रम धर्म में अटूट श्रद्धा थी। मानस में वर्णाश्रम व्यवस्था पर तुलसीदासजी ने लिखा है – ''वर्णाश्रम निज–निज धरम, निरत वेदपथ लोग। चलहिं सदा पावहिं सुखहिं, नाहि भय षोक न रोग।।'' (३)

हमारी संस्कृति में जीवन के ऐहिक और पारलौकिक दोनों पहलुओं को धर्म से सम्बद्ध किया गया है धर्म उन सिद्धान्तों, तत्वों और जीवन प्रणाली को कहते है जिससे मानव जाति परमात्मा प्रदत्त षक्तियों के विकास से अपना लौकिक जीवन सुखी बना सके तथा मष्यु के पष्चात् जीवात्मा षान्ति का अनुभव कर सकें। इस प्रकार से धर्म वह है जो मानव जीवन को इस लोक में तथा परलोक में उन्नति एवं कल्याण करे जिससे मनुष्य मृत्यु पर्यन्त अभय एवं आत्म षांति का अनुभव करे। जिससे सुयश प्राप्त हो। समाज और राश्ट्र में षांति एवं समानता स्थापित कर सके और जो इनकी पूर्ति में सहायक होते है वही मूल्य कहलाते है।

भारतीय संस्कर्षति एवं सामाजिक मूल्यों का वर्गीकरण :

मूल्यों का वर्गीकरण करने से पूर्व संस्कर्षति की व्याख्या करना अपेक्षित है। किसी राश्ट्र अथवा देश की संस्कृति बोध से ही जीवन मूल्यों का पता लगाया जा सकता है।

संस्कृति का संबंध आत्मा से है। संस्कृति की व्याख्या करते हुए राश्ट्रीय कवि दिनकर ने लिखा है – ''असल में संस्कृति जिंदगी का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है, जिसमें जन्म लेते है।'' (४)

भारतीय संस्कर्षति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कर्षति है। अन्य देशों की संस्कृतियॉ तो समय की धारा के साथ–२ नश्ट होती रहती है, किन्तु भारत की संस्कर्षति आदि काल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर–अमर बनी हुई है।

भारतीय संस्कृति का मूल सिद्धान्त है – मानववाद। भारतीय संस्कर्षति के जीवन मूल्य एवं सामाजिक मूल्य वेदों से लेकर संस्कृत साहित्य, तत्पश्चात हिंदी साहित्य में उद्घटित हुए है। हमारी भारतीय संस्कृति में मूल्यों पर विशेष बल दिया गया है प्रत्येक विचारक, तत्वेत्ता मनीशियों ने अपने–अपने तर्को के द्वारा मूल्यों का निर्धारण किया है।

मूल्य शब्द अंग्रेजी के 'वेल्यू' षब्द का ही अनुवाद है। मूल्य का आशय है जीवन जीने का तरीका।

काने के अनुसार मूल्य् वे है – ''मूल्य वे आदर्श है जिन्हें समाज के अधिकांश सदस्यों ने अपना लिया है।'' (५)

हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनेक मूल्य रहे है। भारतीय ऋशियों ने मानव जीवन को चार पुरूषार्थो में विभक्त किया है – धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष। इन पुरूषार्थो ने ही भारतीय संस्कर्षति में आध्यात्मिकता के

साथ भौतिकता का एक अद्‌भुत समन्वय कर दिया है।

हमारी भारतीय संस्कर्षति के ''वसुधेव कुटुम्बकम्'' जैसे जीवन मूल्य रहे है। ''सर्वे भवन्तुः सुखिनः'' की भावना हमारी संस्कर्षति का प्रमुख मूल्य रहा है।'' यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्रदेवताः'' (६) की भावना सर्वत्र विद्यमान रही है। यहॉ नारियों का सम्मान किया जाता था। जीवन में १६ संस्कार निर्धारित थे। सम्पूर्ण जीवन इन्हीं १६ संस्कारों के अन्तर्गत समाहित था। पुरूशार्थ को जीवन मूल्य का पर्याय ही मान लिय गया था।

गुरूजनों का सम्मान करना भारतीय संस्कर्षति का प्रमुख मूल्य रहा है। कबीरदास ने कहा है – गुरू गोविन्द दोह खड़े काके लागू पावं। बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियां बताय।। (७)

उपनिशदों में दान, दया को जीवन मूल्यों के रूप में अपनाने में शिक्षा देते है। वही जैनदर्षक में सत्य, अहिन्सा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रहमचर्य के मूल्यों पर बल दिया गया है।

मूल्य आधारित शिक्षा :

विद्या ज्ञान का अर्जन और हस्तांतरण है वेद में छः अंगों में शिक्षा का प्रथम स्थान है। मूल्य आधारित शिक्षा से तात्पर्य है वह शिक्षा जो चरित्र और सम्मान के साथ जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करे। प्राचीन भारत में शिक्षा की गुरूकुल प्रणाली थी। गुरूकुल शिक्षा प्रणाली में नैतिक, आध्यात्मिक, षारीरिक और चारित्रिक विकास पर जोर दिया जाता था। मानव की उन्नति की साधिका शिक्षा थी। जिसका वैदिक स्वरूप इस प्रकार है – जिससे विधि, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियिता की बढ़ती होवे ओर अविद्यादि दोश छूटे उसको शिक्षा कहते है।

ऐसे उत्कृष्ट स्वरूप वाली शिक्षा से एक व्यक्ति मानव बनता ही आधुनिक शिक्षा पद्धति में वह शक्ति या उद्‌देश्यों की पूर्ति की योग्यता प्रतीत नही होती। जिससे मानव में मनुश्यता के बीच अर्थात श्रेष्ठता के विचार समाहित किये जा सके। वर्तमान युगीन शिक्षा के उद्‌देश्य तो केवल ऐसी शिक्षा देना है जिसमें अधिक से अधिक अर्थ का आगम हो। एक विद्यार्थी प्रशासक, डॉक्टर या इंजनीयर आदि बनते है। परन्तु उसमें नैतिकता का समावेश हुआ है या नहीं यह परिकल्पना से दूर है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में भारतीय जीवन मूल्यों से द्वेश सा है। अतः यहॉ त्याग, तपस्या, ब्रहमचर्य का स्पर्श भी जीवन ने नही करवाया जाता है। शिक्षार्थी अपने आप तक सीमित होते जा रहे है, किसी में माता-पिता, परिवार, समाज तथा राश्ट्र के प्रति भक्ति भाव नहीं, उदारता नही। इसका कारण आदर, सम्मान, सौहार्द, सहानुभूति, संवेदन आदि का अभाव होना है।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय ब्रहमचर्य और अपरिग्रह आदि का आधुनिक शिक्षा पद्धति में कही कोई नाम नहीं है जिसके कारण मनुष्य संस्कारबिहीन हो गया है।

समाज में व्याप्त बुराइयों, अनैतिक आचरण, महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार, बलात्कार, संवेदनहीनता, चरित्र का पतन जैसे बुराइयो को दूर करने के लिए शिक्षा के अन्तर्गत भारतीय संस्कर्षति के मूल्यों का समावेश करना होगा। बालक की प्रथम शिक्षक मॉ होती है, सर्वप्रथम बालक को मूल्यों की शिक्षा मॉ के द्वारा दी जाती है तत्पष्चात् विद्यालय में शिक्षक के द्वारा शिक्षक या आचार्य एक समर्पित व्यक्तित्व का नाम है जिसमें – ''ज्ञान कर्मोपासनाभिर्देवताराधने रतः, षान्तों दान्तो दालुश्च ब्राहमणश्च गुणैःमष्तः।। (८)

मूल्य शिक्षा स्कूलो, कॉलेजों, विश्वविद्यालयो, जेलों और स्वैच्छिक युवा संगठनों में दी जा सकती है। वर्तमान में राश्ट्रीय तथा सामाजिक उन्नति में लिए बौद्धिक विकास के साथ-साथ चारित्रिक विकास की आवश्यता भी महसूस हो रही है चरित्र निर्माण के लिए विशेश पाठ्‌क्रम की आवश्यकता है।

शिक्षा के पेशेवर तथा यांत्रिक हो जाने से आज डॉक्टर, इंजीनियर प्रबन्ध जैसे कलपुर्जो का निर्माण हो रहा है, लेकिन मानव ने संस्कारों का विकास नही हो रहा है। उसमें संस्कार स्थापित करने के लिए मूल्य आधारित शिक्षा की महती अवाश्यकता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली भारतीय संस्कषति एवं सभ्यता से अलगाव का वातावरण का निर्माण कर रही है । अतः वर्तमान में एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जो समाज के विलुप्त नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना कर सके।

सारांश :

हमारी प्राचीन भारतीय संस्कषति गौरवपूर्ण रही है। भारतवर्श विश्व में विश्वगुरू के नाम से जाना जाता था। इसका प्रमुख कारण भारत की शिक्षा पद्धति ही थी जिसमें बालक का नैतिक, चारित्रिक, विकास किया जाता था। संस्कारों की शिक्षा दी जाती थी। आध्यात्मिकता का पाठ पढ़ाया जाता था। बालक को संवेदनाओं से युक्त बनाया जाता था। धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष इन्हीं मूलभूत मूल्यों की चर्चा की जाती थी। गुरूजनों का सम्मान किया जाता था – ''मातष्देवो भवः, पितष देवो भवः, आचार्य देवो भवः, अतिथि देवो भवः स्वाध्याय–मा प्रमदः।।'' (६)

किन्तु वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भारतीय संस्कषति के इन जीवन मूल्यों का अभाव सा हो गया है और समाज में बाल में नैतिक पतन, चारित्रिक पतन, संवेदनहीनता जैसे दुर्गुण व्याप्त हो गये है। नारी जाति के साथ असंवेदनशीलता दिखाई दे रही है। अतः वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भारतीय संस्कषति के जीवन मूल्यों के समावेश में महती आवश्यकता नजर आ रही है। स्कूली शिक्षा को मूल्यों से जोड़ना होगा। मूल्यों से युक्त शिक्षा ही व्यक्ति को विनम्र बनाती है – विद्याददाति विनम्''। यह व्यक्ति को उदारमना बनाती है। इसलिए कहा गया है – ''उदार चरितानायतु वसुधैव कुटुबुंकम्।।''

अतः हमें शिक्षा के लक्ष्यों पर पुनर्विचार करना होगा। जड़ षरीर और बुद्धि को ही नहीं अपितु आत्मा को शिक्षित करना होगा। दया, ममता, प्रेम, परोपकार, त्याग, मानवता, भाईचारा जैसी मूल्यों का समावेश करना होगा। मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रदान करने से ही संस्कारित समाज का निर्माण होगा और उनकी सोच में बदलाव आयेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूचना

१. डॉ० राधाकष्ण – धर्म (पूर्व–पश्चिम)
२. मनुस्मृति
३. गोस्वामी तुलसीदास, रामचरित मानस, उत्तरकाण्ड दोहा–२०
४. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कषति के चार अध्याय पष्ठ – ६५६
५. भारतीय शिक्षा पद्धति और उसकी समस्या, आमेगा प्रकाशन पष्ठ – ३६
६. मनुस्मृति
७. कबीर ग्रन्थावली – परशुराम चतुर्वेदी सम्पादन –
८. शुक्रनीति सार – १–४०
९. तैतीरयोपनिशद्